

## सायंकाणनी स्तुति तथा देववंदन

महादेव्याःकुक्षिरत्नं शब्दश्रुतरवात्मजम्; राज्यंद्रमखं वंदे तत्त्वबोधनदायकम्.	१
न्य गुरुदेव! सखजन्मस्वउप परमगुरु शुद्ध चैतन्य स्वामी. ॐकारं बिद्दुसंयुक्त नित्यं ध्यायंति योगिनः कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमोनमः	२
मंगलमय मंगलकरलु, वीतराज विज्ञान; नमो ताडी जते लये, अरिखंतादि मखान.	३
विश्वभाव व्यापी तदधि, ओक विमल चिद्रूप; ज्ञानानंद मखेश्वरा, न्यवंता जिनभूप.	४
मखत्तत्त्व मखनीय मखः मखधाम गुलुधाम; चिदानंद परमातमा, वंदो रमता राम.	५
तीनभुवन युद्धरतन, सम श्री जिनके पाय; नमत पाईजे आप पद, सज विधि बंध नथाय.	६
दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्, दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्.	७
दर्शनाद् दुरितध्वंसी, वंदनाद् वांछितप्रदः पूजनात् पूरकः श्रीलिंगं, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः	८
प्रभुदर्शनं सुभसंपदा, प्रभुदर्शनं नवनिधि, प्रभुदर्शनसें पामिजे, सकल मनोरथ सिद्धि.	९
ब्रह्मानंदं परमसुभदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्, द्रुद्रातीतं जगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्; ओकं नित्यं विमलमयलं सर्वदा साक्षीभूतम्, भावातीतं त्रिजुष्टरखितं सद्गुरुं तं नमामि.	१०
आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वउपं निजबोधउपम्; योगीन्द्रभीउयं लवरोजवेदां, श्रीमद् गुरुं नित्यमखं नमामि.	११
श्रीमद् परब्रह्मगुरुं वदामि, श्रीमद् परब्रह्मगुरुं नमामि; श्रीमद् परब्रह्मगुरुं लजामि, श्रीमद् परब्रह्मगुरुं स्मरामि.	१२
गुरुब्रह्मा गुरुविषणुर्गुरुदेवो मखेश्वरः, गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः	१३
ध्यानमूलं गुरुमूर्तिः पूजामूलं गुरुपदम्, मंत्रमूलं गुरुवाक्यं मोक्षमूलं गुरुकृपा.	१४
अभंडमंडलाकारं व्याप्तं येन यरायरम्; तत्पदं दृष्टितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः	१५
अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानांजनशलाक्या, यक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः	१६

ध्यानधूपं मनःपुष्पं पंचेन्द्रियं धुताशनम्,  
 क्षमाज्ञाप संतोषपूजा पूज्यो देवो निरंजनः १७  
 देवेषु देवोऽस्तु निरंजनो मे, गुरुर्गुरुष्वस्तु दमी शमी मे;  
 धर्मेषु धर्मोऽस्तु दया परो मे, त्रीष्टयेव तत्त्वानि भवे भवे मे. १८  
 परात्परगुरवे नमः परंपराचार्यं गुरवे नमः  
 परमगुरवे नमः साक्षात् प्रत्यक्ष सद्गुरवे नमो नमः १९  
 अहो! अहो! श्री सद्गुरु, कुरुक्षेत्रसिंधु अपार;  
 आ पामर पर प्रभु कर्पो, अहो! अहो! उपकार. २०  
 शुं प्रभु चरलु कने धरुं, आत्माथी सौ लीन;  
 ते तो प्रभुअे आपियो, वतुं चरलुधीन. २१  
 आ देहादि आलवी, वतो प्रभु आधीन;  
 दास, दास, हुं दास छुं, आप प्रभुनो दीन. २२  
 पद स्थानक समजवीने, भिन्न जतायो आप;  
 म्यानथकी तरवारवतु, अे उपकार अमाप. २३  
 जे स्वरूप समज्या विना, पाम्यो दुःख अनंत;  
 समज्युं ते पद नमुं, श्री सद्गुरु भगवंत. २४

#### नमस्कार

ज्य ज्य गुरुदेव! सलगतमस्वरूप परमगुरु शुद्ध चैतन्य  
 स्वामी अंतरगतमी भगवान् ईश्वरमि भमासमस्तो  
 वंदिते जवस्त्रिगतये निसीद्धिआये मन्थयेसु वंदामि.

परम पुरुष प्रभु सद्गुरु, परमज्ञान सुभधाम;  
 जेसु आपुं भान निज, तेने सदा प्रसाम. २५

#### नमस्कार

ज्य ज्य गुरुदेव!.....मन्थयेसु वंदामि.  
 देस छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत;  
 ते ज्ञानीना चरलुमां, छे वंदन अगसित. २६

#### नमस्कार

ज्य ज्य गुरुदेव!..... मन्थयेसु वंदामि.  
 नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु, शरलुं, शरलुं, शरलुं,  
 त्रिकाल शरलुं, भवोभव शरलुं, सद्गुरुशरलुं,  
 सदा सर्वदा, त्रिविध त्रिविध भाववंदन छे, विनयवंदन छे;  
 समयात्मक वंदन छे, ॐ नमोऽस्तु ज्य गुरुदेव शांति;  
 परम तारु, परम सजजन, परम छेतु, परम दयाण,  
 परम मयाण, परम कृपाण, वालीसुरसाण, अति सुकुमाण,  
 ज्वदया प्रतिपाण, कर्मशत्रुना काण, 'मा लसो मा लसो',  
 शब्दना करनार, आपके चरलुकमलमे मेरा मस्तक,  
 आपके चरलुकमल मेरे हृदयकमलमे अण्डपसु,  
 संस्थापित रहे, संस्थापित रहे; सत्पुरुषोंका सत्स्वरूप,  
 मेरे चित्तस्मृति के पटपर टंकोत्कीर्णवत् सद्योदित,  
 ज्यवंत रहें, ज्यवंत रहें.  
 आनंदमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजभोधरूपम्;  
 योगीन्द्रमीडयं भवरोजवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमलं नमामि.